International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2016; Page No. 16-18

पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में बिम्बः उपलब्धि एवं सीमायें

डॉ0 रेनू पाण्डेय

प्रवक्ता–हिन्दी विभाग, महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय, बरेली, (उ0प्र0), भारत।

सारांश

कवि निराला हिन्दी के प्रमुख छायावादी कवियों में से एक हैं। छायावाद के विकास में इनका अतुलनीय योगदान है। निराला का व्यक्तित्व अप्रतिम था तथा उनके बिम्ब भी उनकी तरह अद्भुत हैं। आधुनिक बिम्ब पाश्चात्य साहित्य की देन है। निराला के काव्य में एक से बढ़कर एक मनोहारी बिम्ब दिखाई देते हैं। इनके काव्य में सर्वत्र सूक्ष्म एवं स्थूल बिम्ब भेदोंपभेदों सहित उपलब्ध है। निराला काव्य में ऐन्द्रिक बिम्ब, प्रकृति बिम्ब, रूप बिम्ब, स्मृति बिम्ब, भाव बिम्ब, धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं मनोवैज्ञानिक बिम्बों का अद्भुत चित्रण दर्शनीय है। कवि के बिम्बों की कोई सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती है। निराला का वैभव से युक्त बिम्ब–विधान उनके साहित्य की महान उपलब्धि है।

मूलशब्दः निराला, बिम्ब, उपलब्धि एवं सीमायें

प्रस्तावना

महाप्राण निराला हिन्दी के गौरवशाली साहित्यकार हैं। वह हिन्दी के प्रमुख छायावादी कवियों में से एक हैं। उन्हें छायावाद का प्रवर्तक माना जाता है। छायावाद के विकास में उनका अतुलनीय योगदान है। निराला के जीवनकाल में चार युग जगे और समाप्त हुए, बचपन व किशोरावस्था में उन्होंने द्विवेदीकाल देखा, यौवनावस्था में छायावादी युग, प्रौढ़ावस्था में प्रगतिवाद एवं वृद्धावस्था में प्रयोगवाद जोरों पर रहा कवि निराला का व्यक्तित्व अप्रतिम था तथा उनके बिम्ब भी उनके व्यक्तित्व की तरह अद्भुत है।

आधुनिक बिम्ब पाश्चात्य साहित्य की देन हैं इनमें प्रमुख समीक्षक एजरा पाउण्ड सी0डे0 लेविस, टी0ई0 ह्यूम कालरिज़ आदि प्रमुख हैं। निराला के काव्य साहित्य में बिम्बों का जैसा प्रयोग दिखलाई देता है, वैसा हिन्दी साहित्य में सहज सुलभ नहीं होता। निराला के काव्य में एक से बढ़कर एक मनोहारी बिम्ब दिखाई देते हैं। इनके काव्य में सर्वप्रथम सूक्ष्म एवं स्थूल बिम्ब भेदोपभेदों सहित उपलब्ध हैं। इनकी सर्वप्रथम कविता 'जूही की कली' है। जिसमें अति सुन्दर बिम्बों का चित्रांकन हुआ है। निराला के काव्य में ऐन्द्रिक बिम्ब, प्रकृति बिम्ब, रूप बिम्ब, स्मृति बिम्ब, भाव बिम्ब, धार्मिक बिम्ब, सांस्कृतिक बिम्ब, ऐतिहासिक बिम्ब एवं मनोवैज्ञानिक बिम्बों का अद्भुत चित्रण दर्शनीय है। इसके अतिरिक्त निराला ने नवीन बिम्बों की सृष्टि के साथ–साथ अनेक प्रयोग भी किये हैं। उनका काव्य बिम्बों एवं प्रयोगों से भरा हुआ है।

निराला की 'राम की शक्ति पूजा' एक महाकाव्यात्मक गुणों से परिपूर्ण कविता है, जिसमें अनेक बिम्ब दृष्टव्य हैं। यदि सम्पूर्ण 'राम की शक्ति पूजा' को एक महाबिम्ब कहा जाये तो यह अत्युक्ति नहीं होगी। वह एक ऐसा महाबिम्ब हैं जिसमें स्थूल एवं सूक्ष्म बिम्बों के सभी रूप उपलब्ध होते हैं। इसमें अत्यन्त सुन्दर दृश्यबिम्बों की सर्जना की गयी है। इस कविता का प्रारम्भ ही मनोहारी दृश्यबिम्ब से होता है।

> "रवि हुआ अस्त ज्योति के पत्र में लिखा अमर
> रह गया राम रावण का अपराजेय समर आज का"।(1)

कवि निराला ने एक से बढ़कर एक विराट बिम्बों की सृष्टि की है। ज्ञानेन्द्रियों पर आधृत बिम्ब ऐन्द्रिक बिम्ब कहलाते हैं। लिविस के मतानुसार – "प्रत्येक बिम्ब चाहे वह विशुद्ध भावनात्मक हो अथवा बौद्धिक, ऐन्द्रिय तत्वों से युक्त रहता है।"(2)

छायावादी काव्य में ऐन्द्रिक बिम्ब कई स्थानों पर उपलब्ध होते हैं। ऐन्द्रिक बिम्ब के अन्तर्गत चाक्षुष, स्पर्श, घ्राण स्वाद एवं श्रव्य बिम्ब आते हैं। यह बात सत्य है कि ऐन्द्रिक बिम्बों में चाक्षुष बिम्ब की प्रधानता है किन्तु स्पर्श, स्वाद, घ्राण, श्रव्य आदि बिम्बों का भी उचित सन्निकर्ष होता है, जोकि चाक्षुष बिम्ब को रसनीय एवं संवेदनीय बनाते हैं। स्पर्श बिम्ब त्वचा से सम्बन्धित होता है। डॉ0 नगेन्द्र के अनुसार – "स्पर्श बिम्ब में स्पर्शजन्य संवेदनों के समन्वय से बिम्ब का निर्माण होता है, पेशल या कोमल, कर्कश कठोर आदि विशेषण इस प्रकार के स्पर्श बिम्बों के वाचक शब्द हैं, जिनके बिम्बात्मक रूप अति प्रयोग के कारण जड़ बन गये हैं।"(3)

निराला की सोच और उनका काव्य भी उनके व्यक्तित्व की तरह ही निराला है उन्होनें प्रकृति को भी अनेक रूपों में अपने साहित्य में सम्मिलित किया है। उनके काव्य में प्रकृति के अनेक सरल, जटिल एवं विराट बिम्ब अपनी छटा बिखेरते दिखाई देते हैं। उन्होंने प्रकृति को सजीव रूप प्रदान किया है एवं प्रकृति को मानवीय रूप दिया है। इन्होंने 'संध्या सुन्दरी' नामक कविता में अत्यधिक सुन्दर एवं अद्भुत चित्र प्रस्तुत किया है। दिवसावसान का समय है, सम्पूर्ण आसमान मेघमय है और संध्या रूपी सुन्दरी परी के समान धीरे–धीरे उतर रही है। यहां अत्यधिक सुन्दर एवं मनोहारी प्रकृति बिम्ब हैं।

> "दिवसावसान का समय
> मेघमय आसमान से उतर रही है
> वह संध्या सुन्दरी परी सी
> धीरे–धीरे–धीरे"।(4)

निराला के काव्य में रूप बिम्ब भी दर्शनीय है। रूप शारीरिक सौन्दर्य का पर्याय है। रूप के निरूपण में नारी एवं पुरूष दोनों का ही चित्रण साहित्य में किया जाता रहा है। 'राम की शक्ति पूजा' में संध्याकाल में राम की वानर सेना रावण की सेना से युद्ध करके लौट रही है तो ऐसा प्रतीत होता है मानों बौद्ध भिक्षुओं की पंक्ति सिर नीचा करके गमन कर रही है। भिक्षुओं की पंक्ति की कल्पना में प्रस्तुत किया गया यह एक सुन्दर रूप बिम्ब बनता है।

> वानर–वाहिनी खिन्न, लख निजपति चरण चिह्न,
> चल रही शिविर की ओर स्थविर दल ज्यों विभिन्न।(5)

काव्य का मुख्य कार्य श्रोता में रसानुभूति उत्पन्न करना होता है। इसलिए काव्य में रस योजना को कवि का मुख्य व्यापार माना जाता है। रस की दो व्युत्पत्तियाँ मानी गयी है, 'सरते इति रसः' जो प्रवाहित हो वह रस है और 'रस्यते इति रसः' अर्थात् जो आस्वादित

किया जाए वह रस है। इस प्रकार हम रस को दो प्रकारों में विभक्त करते हैं एक तो काव्य रस–जैसे वीर, रौद्र, करूण, श्रृंगार, हास्य, भयानक, विभत्स अद्‌भुत वात्सल्य एवं भक्ति और दूसरा आस्वाद पर आधारित रस–खट्‌टा, मीठा, नमकीन कसैला आदि षडरस। निराला के काव्य में बिम्ब का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है। सम्पूर्ण वातावरण गन्ध से आच्छादित है। साहित्य में गन्ध बिम्बों का चित्रण अल्पमात्रा में हुआ है, गन्ध बिम्ब गन्ध सम्बन्धी संवेदनाओं को जाग्रत करते हैं इनका सम्बन्ध ध्राणेन्द्रियों से होता है। निराला के काव्य में अनेक स्थानों पर गन्ध बिम्ब दिखाई देते हैं।

स्मृति बिम्ब में सुधि अथवा स्मरण के सहारे विगत दृश्यों, स्थितियों और वस्तुओं की मानसिक पुनरावृत्ति होती है। निराला के काव्य में स्मृति बिम्बों का बाहुल्य है। उनकी सरोज स्मृति तो सम्पूर्ण स्मृति बिम्ब ही है। उसमें उनकी स्वर्गवासिनी पुत्री की स्मृतियाँ अंकित हैं। निराला ने कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं छोड़ा जहाँ उनके बिम्बों की पहुंच न हो। स्वाद जैसे स्थूल ऐन्द्रियबोध पर सामान्यतः कवियों का ध्यान कम ही गया है। निराला की गर्म पकौड़ी स्वाद बिम्ब का अत्यन्त सुन्दर उदाहरण है। इन पंक्तियों में निराला के आस्वाद्य बिम्ब का आस्वादन सहज ग्राह्‌य है।

गर्म पकौड़ी
ऐ गर्म पकौड़ी
तेल में भुनी
नमक–मिर्च की मिली
ये गर्म पकौड़ी।(6)

भाव मन की प्रसूति है। यह मानव अन्तःकरण का ऐसा तत्व है जो उद्वेलित होकर प्रस्फुटित होता है। भाव को पूर्णतः शब्दों में नहीं बांधा जा सकता है। वह अभिव्यक्ति का स्रोत है और शब्दों का आधार पाकर एक रूप ग्रहण करता है। निराला के काव्य में अनेक स्थानों पर भाव बिम्ब उपलब्ध है। विधवा कविता की निम्नांकित पंक्तियों में दुःख का भाव स्पष्ट दिखाई देता है। अतः यहां पर मार्मिक भाव बिम्ब बनता है।

यह दुःख जिसका नहीं कुछ छोर है,
दैव अत्याचार कैसा घोर और कठोर है।(7)

धर्म सृष्टि को धारण करता है जो कुछ भी धारणा से युक्त है, वह धर्म है। कवि निराला पर वेदान्त का बहुत बड़ा प्रभाव था। निराला ने मानवता का कल्याण करना ही धर्म का मुख्य उद्‌देश्य माना है। 'महाराजा शिवाजी के पत्र' में मानव समूह को उद्‌बोधित करते हुए वे कहते हैं।

"दी है विधाता ने
बुद्धि तुम्हें यदि कुछ
वंश का बचा हुआ
यदि कुछ पुरूषत्व है,
तत्व है,
तपा तलवार
संताप से निज जन्म भू के
दुखियों के आंसुओं से
उस पर तुम पानी दो।"(8)

इस प्रकार धार्मिक बिम्बों की सृष्टि से निराला की अद्‌भुत प्रतिभा कार्य करती रही है। इन्होनें मानव धर्म को सबसे बड़ा धर्म माना है। निराला के काव्य में अनेक स्थानों में सांस्कृतिक बिम्ब दिखाई देते हैं। निराला मानवीय एकता और समानता को ही सबसे बड़ी संस्कृति मानते हैं, सेवा भाव संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। निराला की 'महाराजा शिवाजी के पत्र', 'पंचवटी प्रसंग, तुलसीदास', 'सम्राट एडवर्ड के प्रति', यमुना के प्रति, खण्डहर के प्रति आदि कविताओं में सांस्कृतिक बिम्ब दिखाई देता है। निराला की तुलसीदास सांस्कृतिक कविता है।

सांस्कृतिक बिम्ब की तरह निराला के काव्य में अनेक स्थानों पर ऐतिहासिक बिम्ब के दर्शन होते हैं। इतिहास अपने आप में अतीत की सृष्टि है। यह प्राचीनकाल में हुई घटनाओं का दस्तावेज़ है। कवि के मानसपटल पर जब ऐतिहासिक घटनायें उभरती हैं तो वहां पर अद्‌भुत बिम्ब की सृष्टि होती है, 'खण्डहर के प्रति' कविता में कवि खण्डहर के माध्यम से अतीत का वर्णन कर रहा है। वह खण्डहर से पूछता है – हे खण्डहर क्या तुम आज भी वैसे ही खड़े हो अभी तक तुम्हारा अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ है जिस अतीत को हम भूल चुके हैं, उसे क्यों याद दिलाते हो? जिस प्रकार हवा का झोंका परिमल राग चारों दिशाओं में फैलाता है उसी तरह तुम अतीत के वैभव की धूल पुरातन पुरूष के आशीर्वाद को सब देशों में भेजते हो? इन सब क्रियाकलापों में तुम्हारा कौन–सा उद्‌देश्य छिपा है। कवि ने खण्डहर को लक्ष्य करके भव्य जीवन को स्थिर रूढ़ियों की ओर संकेत किया है। अतः यहां स्वतः ही ऐतिहासिक बिम्ब है–

खण्डहर! खड़े हो तुम आज भी?
अद्‌भुत अज्ञात उस पुरातन के मलिन साज।
विस्मृति की नींद से क्यों जगाते हो हमें
करूणाकर करूणामय गीत सदा गाते हुए?

बिम्ब शब्द अत्यन्त व्यापक अर्थ रखता है। इसका अध्ययन साहित्य एवं मनोविज्ञान दोनों ही क्षेत्रों में हुआ है। निराला के काव्य में अनेक स्थानों पर मनोवैज्ञानिक बिम्बों का सृजन हुआ है। मनुष्य का भाव, व्यापार और चिन्तन क्रिया किसी न किसी रूप में बिम्ब से अनिवार्यतः सम्बद्ध होते हैं।

कवि निराला की बिम्बों तक जो पहुंच है वह अन्य किसी कवि में नहीं उर्पयुक्त बिम्बों के अतिरिक्त निराला ने अनेक नवीन बिम्बों की रचना की है तथा नये–नये प्रयोग किये हैं। सभी कवि अपने काव्य में एक नया प्रयोग तो करते ही हैं किन्तु किसका प्रयोग कितना सार्थक और सफल होता है, यह जानने योग्य है। निराला ने सूक्ष्म से सूक्ष्मतर वस्तु को अपने काव्य में स्थान दिया है। जैसे कुकुरमुत्ता जैसे अनछुए और तुच्छ माने जाने वाले पौधे को भी उन्होंने अपने काव्य–प्रयोग का विषय बनाया और सफल हुए। कुकुरमुत्ता कविता के द्वारा पूँजीपतियों पर व्यंग्य किया है यथा–

"अबे सुन बे, गुलाब
भूल मत जो पाई खुसबू, रंगोआब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट"।(9)

निराला के काव्य में अनेक प्रयोग हुए हैं। उनकी 'खजोहरा' कविता में वर्षा के बादलों को हाईकोर्ट के काले चोगेधारी वकीलों के रूप में दर्शाना एक नूतन सोच है।

कवि के बिम्बों की कोई सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती है। उनके काव्य में प्राकृतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, भाव, ऐन्द्रिक, उदान्त बिम्ब आदि स्थूल एवं सूक्ष्म बिम्बों का चित्रण मिलता है। कवि की समस्त कृतियां हिन्दी साहित्य को दी हुई अनमोल धरोहर हैं। इन बिम्बों में कवि की मौलिक उद्‌भावना और उनकी कल्पनायुक्त नवीन दृष्टिकोण की अभिव्यंजना हुई है। निराला का बिम्ब विधान किसी पुरातन परिपाटी पर चलता हुआ नहीं है अपितु इनके काव्य में अत्यन्त नूतन बिम्बों का सृजन हुआ है। निराला के बिम्बों में कहीं भी जटिलता नहीं पायी जाती है। काव्य बिम्ब की दृष्टि से छायावादी काव्य अत्यन्त समृद्ध है किन्तु कवि निराला के काव्य बिम्बों का विशेष महत्व है। निराला का वैभव से युक्त बिम्ब–विधान उनके साहित्य की महान उपलब्धि है।

सन्दर्भ

1. निराला राम की शक्ति पूजा।
2. सी0डी0लिविस–दि पायटिक इमेज।
3. डॉ0 नगेन्द्र–काव्य बिम्ब, पृ0–9।
4. निराला–परिमल–संध्यासुन्दरी, पृ0–135।
5. निराला–राम की शक्ति पूजा।
6. निराला–नये पत्ते–गर्म पकौड़ी, पृ0–44।
7. निराला–परिमल–विधवा, पृ0–99।
8- निराला–परिमल–महाराजा शिवाजी के पत्र, पृ0–228।
9- निराला–कुकुरमुत्ता।